Jaswant Singh

जसवंत सिंह

मेरी माँ ज्यादातर यही सोचकर रोया करती थीं कि उन्होंने क्या-क्या गंवा दिया।

आरंभ

मेरा खयाल है कि मेरे पिता, उनके भाई और कुछ दूसरे लोगों ने कैनाल पार्क में इन मकानों को अपने हाथों से बनाने के लिए बहुत मेहनत की थी। और जब ये उनके हाथ से निकल गए, तो यह खासकर उन लोगों के लिए एक बड़ा झटका था।

और उनके लिए यह हमसे कहीं बड़ा सदमा था, खासकर मेरी माँ के लिए जिन्हें बहुत ज्यादा सदमा पहुँचा था। वह यह सोच-सोचकर बीमार हो गईं कि उनका सबकुछ खो गया, सारा सामान और सबकुछ।

हमारे कमरे में एक शेल्फ था, बहुत बड़ा शेल्फ जिसमें हम ट्रंक रखा करते थे और सारी चीज़ें उन ट्रंकों में ठसाठस भर दी जाती थीं। वह बस यही सोच-सोचकर रोया करती थीं कि उन्होंने क्या-क्या गंवा दिया। हमलोग चूँकि किशोरवय थे इसलिए शायद हमारे लिए यह कम कष्टदायक था।

मेरी बहन की उम्र उस समय 16 वर्ष थी और मेरे पिता ने किसी तरह उसके लिए एक लड़का तलाश लिया और 30 जनवरी के दिन बीकानेर में उसकी शादी कर दी गई, उसी दिन महात्मा गाँधी को गोली मारी गई थी। बैंड-बाजे वाले शादी के लिए धुन बजा रहे थे और तभी लोग आए और बोले, "श्श्श! पता नहीं है क्या महात्मा गाँधी को गोली मारी गई है और वह अब दुनिया में नहीं रहे?", बस, फिर हर कोई चुप हो गया और उसके बाद कुछ नहीं किया।

हम वक्त के साथ चल रहे थे; हम अपनी खुद की चीज़ें जोड़ रहे थे ताकि उनसे अपना दिल बहला सकें।

अब जाकर लोगों को यह पता चला था कि जिन्ना कौन था और नेहरू कौन था और उनके पिता मोतीलाल नेहरू और महात्मा गाँधी कौन थे। हर किसी को हाथों-हाथ लिया गया था लेकिन भगतसिंह और उधमसिंह को स्वतंत्र भारत के 'बड़प्पन' का उतना श्रेय नहीं मिला जितनी कि उन्होंने इसके लिए भूमिका निभायी थी। उन्हें हाशिये में धकेल दिया गया था और जबकि यही वह लोग थे जिन्होंने खासकर अमृतसर के गोलीकाण्ड का बदला लिया था... और कैसे वे फाँसी के तख्ते पर चले गए क्योंकि वे भारत को स्वतंत्र कराना चाहते थे।

जब मुझे यह पता चला कि कैसे बोस ने गाँधी और नेहरू के लिए समस्या खड़ी कर दी थी तो मुझे आश्चर्य हुआ था और एक बात जो मुझे मालूम थी वह ये कि वह जापानियों के पास जा रहे थे। लोगों को डर था कि ब्रिटिश शासन की जगह जापानी शासन आ सकता है, ऐसा इसलिए क्योंकि बोस उनसे मदद पाने के लिए कोशिश कर रहे थे और ऐसे में उन्हें भी बदले में कुछ चाहिए होगा।

स्कूलों में हम हमेशा यही बातें किया करते थे कि क्या जापानी ज्यादा डरावने हैं ब्रिटिश।

समाप्त